महाभारतेतर संस्कृत साहित्य में भीष्म

संस्कृत साहित्य बहुत विराट है और उसका पूर्णता से अध्ययन लगभग असंभव है। महाभारत पर आधारित ग्रंथ भी चाहे वे काव्य हों या नाटक बहुसंख्यक हैं। इनमें से जो मेरी दृष्टि में आए हैं वे भासकृत नाटक पंचरात्रम, दूत घटोत्कच, श्री भट्टनारायण द्वारा लिखित वेणी संहार नाटक भी महाभारत पर आधारित है। इनमें यद्यपि भीष्म नायक नहीं है फिर भी उनका प्रधान पात्र के रूप में उल्लेख हुआ है। महाकाव्य परंपरा में भी बृहत्त्रयी के तीनों महाकाव्य किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् और श्रीहर्ष कृत नैषधीय चरितम् भी महाभारत या उसमें वर्णित आख्यानों पर आधारित हैं। महाकवि भारवि ने किरातार्जुनीयं के तृतीय सर्ग में व्यास जी के मुख से भीष्म का वर्णन इस प्रकार करवाया है।

त्रिसप्तकृत्वो जगतीपतीनां हन्ता गुरूर्यस्य स जामदग्न्य: ।
वीर्यावधूत: स्म तदा विवेद प्रकर्षमाधारवष गुणानाम् ।18/3

यस्मिन्ननैष्वर्यकृतव्यलीक: पराभवं प्राप्त इवान्तकोऽपि ।
धुन्वन्धनु: कस्य रणे न कुर्यान्मनो भयैकप्रवणं स भीष्म:।19/3

महाकवि माघ ने अपने शिशुपाल वध के चतुर्दश सर्ग में राजसूय के यज्ञ के वर्णन प्रसंग में भीष्म का गौरवशाली और प्रभावशाली वर्णन किया है। धर्म को भलीभांति जानने वाले भी धर्म पुत्र युधिष्ठिर जब राजसूय यज्ञ के अवसर पर मण्डप में उपस्थित माननीय अतिथियों का समूह देखकर यह निश्चित नहीं कर पाते कि किस व्यक्ति की अर्घ्य देते हुए अग्र पूजा की जाए तो वे भीष्म से मार्ग निर्देश प्राप्त करते हैं और भीष्म शास्त्रानुकूल सम्मति देते हुए कहते है कि स्नातक, विद्वान ब्राह्मण, राजा, गुरू, तथा जामातृ इत्यादि संबंधी अर्घ्य के पात्र होते हैं । किंतु इनमें भी यदि सब एक साथ उपस्थित हों तो अलग- अलग पूजा का विधान भी और उनमें से सर्वश्रेष्ठ एक व्यक्ति की अग्र पूजा का भी विधान है । और मेरे

मत में यहां चूंकि सभी उपस्थित हैं अत: सर्वश्रेष्ठ श्री कृष्ण की ही अग्र पूजा की जानी चाहिए।

चैष सकलेऽपि भाति मां प्रत्यशेषगुणबन्धुरर्हति ।
भूमिदेव नरदेव संगमे पूर्वदेवरिपुरर्हणां हरि: ॥58/14॥

वे श्रीकृष्ण को तत्व से जानते हैं और उनकी महत्ता का प्रतिपादन करते हुए युधिष्ठिर को सावधान करते हैं तुम इन्हें मानव मात्र मत समझ बैठना। ये देवों और दानवों को भी परास्त करने वाले, सबके तेज का अतिक्रमण करने वाले परब्रह्म हैं जो हर प्राणी में स्थित है।

मर्त्यमात्रमवरदीधरद्भवान मैनमानमितदैत्यदानवम् ।
अंषएष जनतातिवर्तिनो वेधस: प्रतिजनं कृतस्थिते: ।59/14।

उनकी सम्मति के आधार पर युधिष्ठिर द्वारा जब सहदेव से श्रीकृष्ण की अग्र पूजा करवाई जाती है तो वहां उपस्थित चेदि नरेश शिशुपाल भड़क उठता है। वह युधिष्ठिर की, भीष्म की तथा स्वयं श्री कृष्ण की विविध आक्षेप लगाते घोर निंदा करता है। पूरे महाभारत में भीष्म सबके आदर के पात्र रहे हैं। उन पर इस तरह के आक्षेप शिशुपाल जैसा क्रूर और मूढ़ ही लगा सकता है।

काममयमिह वृथा पलितो हतबुध्दिरप्रणिहित: सरित्सुत: ।19।

वध्यममिहत भुजिष्यममुं सह चानया स्थविर राजकन्यका ।63।

भीष्म यज्ञ जैसे पवित्र अवसर पर अपने ऊपर ऐसे आक्षेप गंभीरता पूर्वक सहन कर लेते हैं ताकि वहां विघ्न टाली जा सके । किंतु जब शिशुपाल ने श्रीकृष्ण की लगातार निंदा की तब वे क्रुद्ध हो उठे । और उन्होंने उपस्थित सभी राजाओं को चुनौती देते हुए कहा कि जिन्हें श्रीकृष्ण की अग्र पूजा सहय नहीं है वे धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा लें और जो शिशुपाल यह कह रहा है कि मेरा जीवन राजाओं

की कृपा पर निर्भर है तो मेरा उत्तर है कि मैं इन राजाओं को तृणवत समझता हूं और उनके सिर पर मैंने यह अपना पैर रख दिया है -

नृपतावधिक्षिपति शौरिमथ सुरसरित्सुतो वचः ।
स्माह चलयति भुवं मरूति क्षुभितस्य नादमनुकुर्वदम्बुधेः ॥44॥

अथ गौरवेण परिवादमपरिगणयंस्तमात्मनः ।
प्राह मुररिपुतिरस्करणक्षुभितः स्मवाचमिति जाह्नवीसुतः ॥45॥

विहितं मयाद्य सदसीदमपमृषित मच्युतार्चनम् ।
यस्य नमयतु स चापमयं चरणः कृतः षिरसि सर्वभूभृताम् ।46।

हिन्दी साहित्य में भीष्म

हिन्दी साहित्य में भी अनेक मान्य कवियों ने भीष्म के चरित्र का अंकन विविध प्रकार से किया है। श्री मैथिली शरण गुप्त जी ने अपने विशालकाय ग्रंथ 'जय भारत' में उनका स्वरूपांकन किया है भीष्म के जीवन की या कहें कि संपूर्ण महाभारत की सबसे महत्वपूर्ण घटना जिसके कारण देवव्रत भीष्म बनें वह उनकी प्रतिज्ञा है इस अवसर का शब्द चित्र गुप्त जी ने इस प्रकार खींचा है-

परिजन शांत रहें साक्षी हों देश काल जलवायु समर्थ।
निज राज्याधिकार तजता हूं मैं भावी भ्राता के अर्थ।
बाधक बनें न आगे जिसमें कोई औरस अविचारी।
मैं विवाह ही नहीं करूंगा बना रहूंगा व्रतधारी॥

पंडित लक्ष्मीनारायण मिश्र जी ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'सेनापति कर्ण' में भीष्म के व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए लिखा है-

कुरूकुल शेखर, हमारे पितामह जो ,
विष्व विजयी थे जितेन्द्रिय जगत में।

डा. रामकुमार वर्मा ने भी अपने ग्रंथ 'एकलव्य' में उनके व्यक्तित्व का अंकन इस प्रकार किया है-

तपो व्रतधारी वीर भीष्म श्री गांगेय हैं
श्वेत केश राशि है ललाट दिव्य है अहा
पालक हैं वे ही कुरूवंश के
संकेत से राजनीति चलती है
जैसे भूमिभेद से ।

एक अन्य स्थल पर वे फिर लिखते हैं -

राजसभा शांत, धृतराष्ट्र नृप मौन हैं
जैसे यह मौन एक पीठिका है जिसमें
भीष्म लिखते हैं राजनीति की सुमंत्रणा
राजवंश गौरव की रागमयी मसि से।

उनके व्यवहार से गद्-गद् द्रोण कहते हैं कि -

राजन! गांगेय भीष्म! और सभ्य मानवो!
भीष्म का पवित्र पुण्य आज इस क्षेत्र में।
जागता है जिससे कि ब्राह्मणों की पूजा है।

'अंगराज' नामक महाकाव्य के लेखक आनंद कुमार जी ने अपने ग्रंथ के सोलहवें ,सत्तरहवें और अठारहवें सर्ग में भीष्म का वर्णन किया है।

सोलहवें सर्ग में जब दुर्योधन उनसे कौरव सेना का प्रधान सेनापति पद ग्रहण करने का अनुरोध करता है तब भीष्म की प्रतिक्रिया इन शब्दों में वर्णित है-

तव समान ही यद्यपि पाण्डव मम कुल मान प्रवर्धक हैं।
तथा हृदय से हम उनके ही स्नेही पक्ष समर्थक हैं।
किंतु राज्य सेवार्थ मुख्यत: राष्ट्र धर्म पालन करने।
राजभाव से हम जायेंगे स्वजनों से भी रण करने।8/16

17वें सर्ग में भीष्म द्वारा किया गया युद्ध वर्णित है जहां पृथ्वी कहती है -

ताल केतु तालांक भीष्म का आज हुआ है पौरूष दीप्त।
ताल वृंत युत यथा उठा है वह करने युद्धाग्नि प्रदीप्त।27/17

पद गौरव स्वात्माभिमान से जलता इसका भाल प्रदेष ।
महाष्मश्रु में समा गये हैं मानो आकर स्वयं दिनेष ।
राजमण्डली लेकर चलता यों सेनानी मानी भीष्म ।
यथा आतपी उग्र रूप से चलता है लेकर ऋतु ग्रीष्म ।

रण प्रयाण के इस वर्णन के पश्चात 18वें सर्ग में कवि ने भीष्म कृत भीषण युद्ध का चित्रण किया है जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

शतधा रण चातुर्य दिखाता। तथा अनारत शर बरसाता।
बढ़ा भीष्म रिपु ध्वंसक ऐसे। क्षुब्ध युगांत पयोनिधि जैसे।
उसके मंत्रित शर जब छूटे। प्रतिगज कुंभ भाग्य सम फूटे।

आगामी दिन मर्दन कारी। किया भीष्म ने भीमर भारी।
देख दुर्दशा निज वीरों की। केशव ने रथ की गति रोकी।
रथ विहीन वे सम्मुख आये। बढ़े भीष्म पर चक्र उठाए।
कहा भीष्म ने चाप चढ़ाके। हरि करिये रण चक्र चलाके।
आज विजय हो गयी हमारी। हुई प्रतिज्ञा भंग तुम्हारी।

रण में अर्जुन द्वारा किये गए छल पूर्वक शिखण्डी को आगे करके किये गए भीष्म निपात के का उल्लेख कवि ने इस प्रकार किया है-

बना शिखण्डी रथ यथा, भीष्म मृत्यु का द्वार।
अर्जुन जिसकी ओट से, करने लगा प्रहार।28/18

भीष्म के शरशैया पर गिरने पर कर्ण दुखी मन से उनसे मिलने जाता है और पहले का सारा अभिमान और द्रोह छोड़कर भीष्म से क्षमा मांगता है और युद्ध करने की आज्ञा भी। तब भीष्म उसके जन्म का रहस्य प्रकट करते हैं और उसे पाण्डव पक्ष में अपने भाईयों के पास जाने को कहते हैं किंतु कर्ण अपने सिद्धांत पर अडिग रहता है और विनम्रता पुर्वक अस्वीकार कर देता है। वह मित्र हित रण करने की आज्ञा मांगता है इस मार्मिक प्रसंग को आनंद कुमार जी ने इस प्रकार चित्रित किया है-

कहा कर्ण ने भीष्म से दिखला स्नेह अगाध।
क्षमा करें हे आर्य अब निज प्रति मम अपराध।

तब भीष्म बोले -

बोला पुन: भीष्म यह वाणी। सुत तुम हो देवोपम प्राणी।
तुम हो वीर जगत के नेता। पुरूष रत्न संसार विजेता।
तुम कीर्तित हो अनुपम दाता। कृष्णार्जुन सम रण विज्ञाता।
विदित हमें तव गुणवत्ता है। स्वीकृत तव अनन्य सत्ता है।

वे कर्ण के प्रति पूर्व में किये गए अपने क्रोध को भी कृत्रिम बताते हैं -

जिससे नृप परिवार में बढ़े न बंधु विरोध।
तुम पर करते थे प्रकट हम निज कृत्रिम क्रोध।31/18

सूत नहीं हे अंगपति तुम हो कुंती जात।
इसको मान यथार्थ अब करो न बंधु प्रघात।

पंडित रामेश्वर प्रसाद अंचल जी जैसे समर्थ कवि ने भी 'अपराधिता' कृति में भीष्म की मनोव्यथा का बड़ा मार्मिक अंकन प्रस्तुत किया है अंबा प्रकरण में अपनी सदोशता पर प्रायश्चित करते हुए भीष्म कहते हैं-

धुलेगा न भी जननी जाह्नवी की पुण्य धारा में।
कलंकित कृत्य मेरा जो बना अध्याय जीवन का।
विफल होगा न यह प्रतिषोध पुंजीभूत अंबा का।
करेगा भस्म होमानल उसी के तापसी प्रण का।

द्रौपदी पर द्यूत भवन में हुए अत्याचार का प्रतिरोध न करने के अपने अपराध पर वे कहते हैं -

बचा पाया नहीं मैं राजदेवी को अनय छल से।
न पाया रोक रिपुता में धंसे उन्मत्त अधिबल से।
अरक्षित आर्त अबला का सुना कब मर्म भेदी स्वर।
न देखा देखकर पौ श्रांगना का दृश्य दुख कातर।

कौरव पक्ष की ओर से लड़ने की अपनी विवशता पर भी उनका मन व्यथित है-

दिया मैंने उन्हीं का साथ जो हैं घोर अविचारी।
बना सेनाधिपति लड़ता उन्हीं का पक्ष प्रणधारी।
कहां सद्धर्म सब मेरा कहां यह घोर स्वार्थानल।
सुधा तप त्याग की उज्ज्वल कहां यह युद्ध हालाहल।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी साहित्य में भी भीष्म के विषद चरित्र को और उनके मानसिक द्वन्द्व को चित्रित करने का सफल उद्योग सत्कवियों द्वारा किया गया है ।

राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर जी द्वारा महाभारत पर आधारित दो प्रसिद्ध खण्ड काव्य लिखे गए हैं जिसमें रश्मिरथी तो कर्ण के जीवन पर आधारित है किंतु कुरूक्षेत्र में हमें परितप्त युधिष्ठिर और उनका प्रबोध करते हुए भीष्म पितामह के दर्शन होते हैं जहां भीष्म अपनी युक्तियों से सिध्द कर देते हैं कि युद्ध के लिए व्यक्तिगत रूप से तुम उत्तरदायी नहीं हो और वे उन्हें कर्मयोगी बनने का उपदेश देते हैं -

धर्मराज यह भूमि किसी की नहीं क्रीत है दासी।
हैं जन्मना समान परस्पर इसके सभी निवासी।

भीष्म को लेकर अनेक खण्ड काव्यों का सृजन किया गया है जैसे सत्येन्द्र मिश्र का अहोरात्र, डा. स्वर्ण किरण का खण्ड काव्य भीष्म, श्री रामसहाय लाल श्रीवास्तव का ग्रंथ देवव्रत भीष्म और किशोर कावरा कृत परिताप के पांच क्षण उल्लेखनीय हैं किंतु मुझे ये ग्रंथ उपलब्ध न हो सके अत: इनका पठन मैं अभी तक नहीं कर सका हूं ।

किंतु जहां तक मेरा ज्ञान है भीष्म के संपूर्ण जीवन को समाहित करने वाला कोई महाकाव्य हिन्दी में अभी तक नहीं लिखा गया था और इस कारण से विद्वान मेरी कृति देवव्रत को देखकर मुदित होंगे ।